श्रीमद् राजचंद्र निजाभ्यास मंडप और विहार भवन ट्रस्ट (अहमदाबाद - वडवा - इडर) आयोजित

''श्री आत्मसिद्धि प्रतियोगिता''

प्रश्नपत्र विभाग - १

प्रश्न - १ : रिक्तस्थान की पूर्ति करो **अंक - १०**

१. कर ..... तो पाय
२. आत्मादि ....., जो निरुपक शास्त्र
३. अथवा प्रेरक उन्हें कहे ..... दोष प्रभाव
४. आत्मा सत् चैतन्यमय, ... रहित
५. ..... जो कल्पना, वह नही सद्व्यवहार
६. फिर शुभाशुभ कर्मका ..... नही कोय
७. पाए स्थानक ....., इसमें नही संदेह
८. भाव कर्म निज कल्पना, इसलिए .....
९. आत्मा ..... नित्य है
१०. पाँचो उत्तरसे हुआ, ... सर्वांग
११. उदय होय ....., वीतराग पद वास
१२. आत्मा सदा असंग, और करे ..... बंध
१३. अशुभ करे नरकादि फल, ... न कहीं
१४. मूल हेतु इस मार्गका, समजे कोई .....
१५. अबाध्य अनुभव जो रहे, वो है .....
१६. ..... के उत्पत्ति लय, किसके अनुभव वश ?
१७. क्या समजे ..... कि, फल परिणाम हो ?
१८. ..... बात है शिष्य यह, कहा संक्षेप में सार
१९. ये ही धर्मसे मोक्ष है, तू है .....
२०. इन पदकी सर्वांगता, ... निर्धार

प्रश्न - २ : सच्चा या झूठा **अंक - १०**

१. बंध मोक्ष है कल्पना
२. परम बुद्धि स्थूल देहमें, कृश देह मति अल्प (आत्मसिद्धि शास्त्रके संदर्भमें)
३. मतार्थी जीवोमें शुष्कज्ञानी और क्रियाजड जीवोका समावेश नहीं होता
४. आत्मा नही अविनाश, देह वियोगे नाश
५. क्या प्रभु चरणोमें धरुं, सब से हीन है आत्मा
६. फलदाता ईश्वरकी, इसमें होगी जरुरत
७. मोक्ष मार्गमें निश्चय नय, व्यवहार नय दोनो साथ रहते है
८. आत्मसिद्धि शास्त्रमें लोभ कषायकी बात आती है
९. कालकी बात आत्मसिद्धि शास्त्रमें आती नहीं
१०. वस्तु क्षणिक है, क्षण क्षण पलटती है, इसलिए आत्मा भी क्षणिक ही है
११. आत्मादि अस्तित्वके जो निरुपक शास्त्र है, वह प्रत्यक्ष सद्गुरु का योग न हो, वहां संसारी जीवोको उपयोगी आधाररुप है
१२. उपादानका नाम लेकर, जो निमित्तको नही छोडते, वे भ्रांतिमें स्थित नही रहते
१३. मायादिक महाशत्रु सद्गुरुके शरणमें जाने पर अल्प प्रयास से जाते है
१४. व्यवहार लक्षमें रखकर, निश्चय साधन करने चाहिए
१५. जाति-वेषका भेद नहि, ज्ञानीके कहे मार्ग को मात्र जानने से वे मुक्ति पाते
१६. ज्ञानीकी द्रष्टि में परमार्थ मार्ग तीनों कालमें एक होता है
१७. जिज्ञासु जीवको सदगुरुका बोध हो तो समकितको पा सके
१८. मुखसे ज्ञान कहे और अंतरमें मोह छुटा हो तो ज्ञानीका द्रोह करते नही
१९. जडसे चेतन उपजे और चेतनसे जड हो ऐसा अनुभव कभी किसी को होता है
२०. अनंत तीर्थंकरोका बोध श्रीमद्जीने आत्मसिद्धि शास्त्रमें गाथाओके रुपमें रचा है

प्रश्न – ३ सही उत्तर खोजो **अंक – १०**

१. आत्मसिद्धि शास्त्रमें किसकी बात करने में नही आयी है ?
(१) क्रियाजड (२) मुमुक्षु
(३) असंज्ञीजीव (४) शुष्कज्ञानी

२. सबसे अधिक गाथाए कौनसी शंकाके समाधानके लिये श्री गुरुने कही है ?
(१) पहली (२) तीसरी
(३) छठ्ठी (४) दूसरी

३. क्रियाजडको कौनसी बात लागु नही पडती है ?
(१) बाह्य क्रियामें राचे (२) ज्ञानमार्ग निषेधते
(३) अंतर्भेद न कोई (४) समझे स्वरुप वृत्तिका

४. आत्मा कैसा नही है ? (तीसरी और छठ्ठी शंकाके समाधान अनुसार)
(१) सत् (२) सर्वाभास रहित
(३) चैतन्यमय (४) सदा केवल असंग

५. आत्माकी शंका करनेवाला कौन है ?
(१) मुमुक्षु (२) मतार्थी
(३) आत्मा (४) आत्मार्थी

६. चेतन जागृत हो तो किसका कर्ता है ?
(१) कर्म (२) स्वभाव
(३) ईश्वर (४) उपरोक्त सभी

७. निम्नमें सें कौनसा ''छ पद'' में नही है ?
(१) भोक्ता है (२) मोक्ष है
(३) अनित्य है (४) आत्मा है

८. तीसरी शंका में किस किस को कर्ता कहा है ?
(१) कर्म (२) स्वभाव
(३) ईश्वर (४) उपरोक्त सभी

९. जीव कैसे समकित प्राप्त करता है ?
(१) कषायोंकी उपशांतता आदी ४ लक्षणोसे
(२) सदगुरु बोधसे (३) अंतरशोधसे
(४) उपरोक्त सभी

१०. स्वच्छंद रोकनेका फल क्या है ?
(१) समाजमें सम्मान (२) मोक्ष
(३) बाह्य क्रियामें कुशलता (४) उपरोक्त कोइ नही

११. आत्माको पहचाननेका चिन्ह कौनसा कहा है ?
(१) पांच इन्द्रियां (२) असि (तलवार)
(३) देह (४) प्रगट चेतना

१२. छठी शंका में शिष्य क्या विकल्प करता है ?
(१) अनंत कर्मोका (२) अनेक मतोका
(३) जाति – वेषका (४) उपरोक्त सभी

१३. मतार्थीके लक्षण :
(१) बिनाज्ञान बाह्य त्याग
(२) प्रत्यक्ष सदगुरुसे दूर रहना
(३) उपशम – वैराग्यका अभाव (४) उपरोक्त सभी

१४. निजस्वरुपके लक्षण :
(१) मृत्यु और जरा रहित शाश्वत (२) देहरुप
(३) कर्मचेतनारुप (४) उपरोक्त सभी

१५. आत्मार्थीके लक्षण :
(१) त्रियोगपूर्वक सदगुरुका आज्ञावर्ती
(२) सरलपना न मध्यस्थता
(३) शास्त्र अभ्यासी (४) उपरोक्त कोइ नही

१६. संसारमें अनंतकाल बीतने का कारण
(१) देहादि संयोग (२) शुभाशुभ भाव
(३) कर्म (४) उपरोक्त कोइ नही

१७. प्रथम शंकामें आत्मा को कैसा कहा है ?
(१) प्राणरुप (२) इन्द्रियरुप
(३) देहरुप (४) उपरोक्त सभी

१८. ज्ञानीकी दशा कैसी होती है ?
(१) अनासक्त (२) परम शांत
(३) जगत मिथ्या मानता है (४) उपरोक्त सभी

१९. दूसरी शंका में आत्मा को कैसा कहा है ?
(१) अविनाशी (२) ज्ञानस्वरुपी
(३) देहरुप (४) उपरोक्त कोइ नही

२०. शुष्कज्ञानी का लक्षण :
(१) बंधका स्वरुप समझता है
(२) मोक्षको कल्पित नही कहता है
(३) मोहावेशमें नही वर्तता
(४) उपरोकत कोइ नही

प्रश्न - ४ मिलान (जोड) करो, कोलम A, B से **अंक - ०५**

कोलम A		कोलम B
(१) आत्मार्थी	(१)	समता - क्षमा
(२) औषध	(२)	अंतरदया
(३) जिज्ञासु	(३)	दासत्वभाव
(४) सद्‌गुरु	(४)	बूडे भवजलमें
(५) क्रियाजड	(५)	अपूर्व वाणी

कोलम A		कोलम B
(६) शिष्य	(६)	बाह्य क्रिया
(७) मतार्थी	(७)	शोधे सदगुरुयोग
(८) मुमुक्षु	(८)	सद्‌गुरु विमुख
(९) असद्‌गुरु	(९)	लोपे सद्‌व्यवहारको
(१०) शुष्कज्ञानी	(१०)	विचार-ध्यान

प्रश्न - ५ उत्तर लीखो १ या २ शब्दो में **अंक - १०**

१. योग्य समझ कर जो योग्य आचरण करता है उसे क्या कहते है ?
२. आत्मा और देह समान प्रतिभासित होने को क्या कहते है ?
३. किसकी ओर प्रेरित करता है वह व्यवहार समंत कहलाता है ?
४. केवल निजस्वभावका जो अखंड ज्ञान वर्तता है उसे क्या कहते है ?
५. सर्प आदिमें क्रोधादिकी तरतम्यता का क्या कारण है ?
६. यदि परमार्थकी इच्छा हो तो कैसा पुरुसार्थ करना चाहिए ?
७. कैसा जीवको आत्माका लक्ष्य नही होता है ?
८. म्यान और तलवार भिन्न है, ऐसे देह और आत्मा भिन्न है, ऐसा कितनी गाथाओमें कहा है ?
९. वैराग्य आदि किसके सहित होने से सफल होते है ?
१०. कर्म अपने स्वभावसे ही कर्मरुप परिणमन करता है और भोगसे दूर होता है, इसमें किसकी आवश्यकता नही है ?
११. सुविचारणा उपजनेसे क्या समझमें आता है ?
१२. अनंत प्रकारके कर्मोमें मुख्य कर्म कौनसा है ?
१३. निजपद निजमें ही संप्राप्त हुआ तब क्या दूर हुआ ?
१४. पांचो इन्द्रियोंके विषयका ज्ञान किसको है ?
१५. शिष्य शंकामें किसकी सिद्धि हुए बिना जगत नियम नही होता ऐसा कहता है ?
१६. क्या छूटे तो जीव कर्मोका कर्ता और भोक्ता नही होता ?
१७. किसका स्वभाव प्रेरणा करनेका नही है ?
१८. किस प्रख्यात विद्वानने आत्मसिद्धि शास्त्रको ''जैनोकी गीता'' कही है ?
१९. श्रीमदजीके स्वहस्ताक्षरमें लिखित आत्मसिद्धि शास्त्रकी मूल प्रत किस आश्रममें सुरक्षित है ?
२०. ''आत्मज्ञान त्यां मुनिपणुं'' आत्मसिद्धि शास्त्रकी यह गाथा किस आगमके आधार से प्रमाणभूत है ?

प्रश्नपत्र विभाग - २

प्रश्न - ६ तफावत (फर्क) लीखो १ या २ लाईन में, कोइ भी पांच **अंक - ०५**

१. क्रियाजड और शुष्कज्ञानी
२. आप स्वभाव और कर्म प्रभाव
३. ज्ञानदशा और साधनदशा
४. देहाध्यास और देहातीत दशा
५. कर्मभाव और मोक्षभाव
६. देह रोग और अंतर रोग
७. बंधका पंथ और मोक्षका पंथ
८. बोध और वीतरागता

प्रश्न - ७ उत्तर लीखो, १ या २ पंक्तिमें (लाइनमें) अंक - १६

१. श्रीमदजीने आत्मसिद्धि शास्त्रमें मोक्षमार्ग किन दो कारणो से दर्शाया है ?
२. मतार्थी की दुर्दशा के चार (४) लक्षण बताओ ?
३. ''कर्मबंध क्रोधादिसे हणे क्षमादिक तेह....'' इसमें क्रोधादिक और क्षमादिक दोनो ''आदि'' शब्दोसे क्या ग्रहण करना चाहिए ?
४. श्रीमद्जीको आत्मसिद्धि शास्त्र रचनेकी करुणा क्यों उपजी ?
५. ''सर्व जीव छे सिद्धसम...'' गाथा का भाव समझाओ
६. परोक्ष जिन उपकारसे प्रत्यक्ष सदगुरुको क्यों अधिक महत्व दिया है ?
७. आत्मा स्वयं आत्माकी शंका करता है इसका अचरज (आश्चर्य) क्यों है ?
८. ''जैसे कोटि वर्षका स्वप्न जागृत होते मिट जाता...'' इसके द्वारा क्या समझाना चाहते है ?
९. देहादि संयोगका जब आत्यंतिक वियोग होता है तब क्या होता है ?
१०. अनंत दुःख प्राप्त होनेका कारण क्या है ? वह किस प्रकार टले ?
११. ''किस जातिमें, कौनसे वेषमें मोक्ष है ...'' इस शंकाका उत्तर सद्गुरु क्या देते है ?
१२. ''कारण बिना कार्य नही होता'' ऐसा किसके उदाहरणसे समझाया है ?
१३. ''निश्चय सर्वे ज्ञानीका आकर यहां समाय...'' इसके बाद क्या हुआ ?
१४. कर्मकी ग्रंथिके मुख्य कारण कौनसे है ?
१५. निज पक्षका त्याग करके सदगुरुके चरण सेवन करनेसे क्या होता है ?
१६. ''आत्मसिद्धि शास्त्र''का किन सात भाषाओमें अनुवाद हुआ है ?

प्रश्न - ८ उत्तर लीखो, अपनी समझ अनुसार, २-३ पंक्तिमें (लाइनमें) अंक - १०

१. ''आत्मा नित्य है'' इसका निर्धार श्रीमद्जीने सुयुक्तिसे किस प्रकार करनेको कहा है ?
२. मतार्थी और आत्मार्थीके लक्षण किस लिए कहे गये है ?
३. ''आत्मा स्वयं ही कर्मका कर्ता है '' यह किस प्रकार समझाया गया है ?
४. सदगुरुके योगमें मतार्थी और आत्मार्थीका कैसा कैसा वर्तन होता है ?
५. शिष्य गुरुके प्रति अत्यंत विनय किस प्रकार व्यक्त करता है ?

प्रश्न - ९ उत्तर लीखो, ५- ६ पंक्तिमें (लाइनमें) अंक - २४

१. ''स्वच्छंद'' संबंधित तीन गाथाएं समझाओ
२. आत्मसिद्धि शास्त्रकी रचनाके संबंध में : तिथि, तारिख, बार, समय, स्थल, कितने समयमें रची गई, कितनी गाथाएं है, किसकी विनंती से लिखि गई, क्युं लिखी गई, कितनी प्रतिर्यां बनाइ गई, ये प्रतिर्यां किस किसको दी गई ? सब बताओ
३. ''आत्मा ही संसार और मोक्षके लिए उत्तरदायी है, अन्य कोई नही'' यह बात ''छ पद'' द्वारा किस प्रकार समाझाइ गइ है ?
४. सुविचारणाका प्रगटना मोक्ष मार्गमें किस लिए अनिवार्य है यह दर्शाओ
५. ज्ञानीकी दशा आत्मसिद्धि शास्त्रकी गाथाओके आधारसे लिखो
६. बोधबीज प्राप्त होनेके बाद उत्पन्न हुए शिष्यके भाव दर्शाओ
७. आत्मसिद्धि शास्त्रकी परीक्षाकी तैयारीसे आपको क्या लाभ हुआ ?
८. आत्मसिद्धि शास्त्रकी कौनसी गाथा आपको सर्वाधिक स्पर्श कर गई और आपके व्यक्तिगत पुरुषार्थमें उपयोगी लगी यह विस्तारसे बताओ ?

कुल अंक - १००